

युद्ध की प्रार्थना

मार्क ट्वेन

एक बूढ़ा अजनबी गिरजाघर के अन्दर आया और धीरे-धीर पादरी के मंच के पास आगे बढ़ा, उसकी आँखें पादरी पर गढ़ी थीं, उसका लम्बा शरीर पैरों तक फैले लबादे से ढका था, उसके सिर पर बाल नहीं थे, उसकी घनी सफ़ेद दाढ़ी कन्धों तक थी, उसका झुर्रियों से भरा चेहरा अजीब तरीके से फीका पड़ा हुआ था, भूतिया होने की हद तक. "मैं ईश्वर के सिंहासन से आया हूँ- सर्वशक्तिशाली ईश्वर का सन्देश लेकर!" उसके शब्दों से पूरे गिरजाघर में खड़े लोगों और सिपाहियों पर बिजली सी गिर गई... "उन्होंने अपने सेवक तुम्हारे पादरी की प्रार्थना सुन ली है, और अगर तुम्हारी इच्छा हो तो वे इसे कबूल कर लेंगे, जब मैं, उनका संदेशवाहक, तुम्हें तुम्हारी प्रार्थना का अर्थ समझा दूंगा- यानी तुम्हारी प्रार्थना का पूरा अर्थ..."

"इसपर विचार करो- इसे अपने मन में रखो. अगर तुम अपने लिए कृपा मांग रहे हो, सावधान! कहीं तुम अनजाने में अपने पड़ोसी के लिए श्राप तो नहीं मांग रहे हो. अगर तुम अपनी फसल पर बारिश होने की प्रार्थना कर रहे हो जो उसे चाहिए, ऐसा करने से हो सकता है कि तुम किसी पड़ोसी की फसल के लिए श्राप की प्रार्थना कर रहे हो जिसे बारिश नहीं चाहिए और जिससे उसका नुकसान हो सकता है."

"तुमने अपने सेवक की प्रार्थना सुन ली है- जो उसने शब्दों में कही. मुझे ईश्वर ने आदेश दिया है कि मैं शब्दों में दूसरी प्रार्थना कहूँ- वह प्रार्थना जो पादरी ने – और तुमने भी अपने हृदय में- चुपचाप बड़ी उम्मीद से कही. क्या तुमने यह अनजाने में और बिना सोचे कही? ईश्वर करे ऐसा ही हो! तुमने यह शब्द सुने 'हे ईश्वर, हमारे ईश्वर, हमें विजय दो!' इतना काफी है. बोली हुई पूरी प्रार्थना इन शब्दों में सिमट गई. और कहना जरुरी नहीं था. जब तुमने विजय के लिए प्रार्थना की है तब तुमने बिना कहे कई और परिणामों के लिए भी प्रार्थना कि है जो विजय के बाद आते हैं- और आने

पर मजबूर हैं. ईश्वर के पास तुम्हारी प्रार्थना के अनकहे शब्द भी पहुंचे. उन्होंने मुझे उस प्रार्थना को शब्दों में कहने का आदेश दिया है. सुनो!"

हे ईश्वर परमपिता, हमारे नौजवान देशभक्त, हमारे हृदय के लाडले, युद्ध लड़ने जा रहे हैं- आप उनके साथ रहना! उनके साथ मन-ही-मन हम भी जा रहे हैं अपने घर की शान्ति से दुश्मन को कुचलने के लिए. हे ईश्वर, हमारे ईश्वर, हमें मदद करो अपने गोलों से उनके सिपाहियों के चीथड़े उड़ाने में; उनके मुस्कुराते हुए खेतों को उनके देशभक्तों की फीकी पड़ी लाशों से पाटने में; हमारी मदद करो, उनके घायल और दर्द से छटपटाते लोगों की चीखों तले बंदूकों की गड़गड़ाहट को छुपाने में; हमारी मदद करो आग की लपटों से उनके घर तबाह करने में; हमारी मदद करो उनकी निर्दोष विधवाओं के दिलों को व्यर्थ के दुःख से मरोड़ने में; हमारी मदद करो उन्हें बेघर करने में ताकि वे अपने बच्चों के साथ बिना किसी दोस्त के, फटे हुए कपड़ों में अपने तबाह खेतों में भूखे-प्यासे भटकें, गर्मी में सूरज की झुलसती हुई लपटों में और सर्दियों की बर्फीली हवाओं में, तुमसे मौत की गुहार लगाते हुए मगर उन्हें वह भी नसीब न हो-

हमारे खातिर, जो तुमसे प्रेम करते हैं , हे ईश्वर, उनकी उम्मीदें तबाह कर दो, उनका जीवन झुलसा दो, उनकी यह कष्टपूर्ण यात्रा लम्बी कर दो, उनके कदम भारी कर दो, उनके रास्ते उनके आंसुओं से भर दो, सफ़ेद बर्फ को उनके लहू-लुहान पैरों से लाल कर दो!

हम ये ईश्वर के प्रेम में मांगते हैं, जो प्रेम का सागर है, जो पीड़ितों का सहारा और दोस्त है, और जिसकी मदद हम विनम्रता और पश्चाताप से मांगते हैं.

(थोड़ा रुकने के बाद) "तुमने यह प्रार्थना की है; अगर तुम अभी भी यही चाहते हो तो बोलो! सर्वोच्च सत्ता का संदेशवाहक इंतजार कर रहा है"

...

बाद में सबने कहा कि वह आदमी पागल था, क्योंकि उसकी बातें बेवकूफी भरी थीं.